'शिक्षा प्रणाली बच्चों को अपना और अन्य के जीवन सुख से जीने की तरीका सिखाये और वे शिक्षा भी राजनीति की हिसा बने'-- श्री मनीष शिसोदिया

नई दिल्ली, 3 February:
प्रजापिता ब्रहमा कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्थानीय हरि नगर राजयोग केंद्र पर **'मूल्य शिक्षा और अध्यात्म द्वारा खुसी बढ़ाने'** विषय के उपर शिक्षकों केलिए एक दिवसीय सम्मेलन सम्पर्ण हुआ ।

दिल्ली के शिक्षा मंत्री श्री मनीष सिसोदिया अपनी उद्घाटन वक्तव्य में कहा की सिर्फ बाहरी संसाधन और सुविधाओं के आधार से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास संभव नही है। शिक्षा का मूल उद्देश्य है, बच्चों को सिर्फ नौकरी क्षम नही, बल्कि उन्हें इमोशनल और प्रोफेशनल आत्म निर्भरशीलता प्रदान करने का है । जिससे वे सुख से जियें और दूसरों को सुख से जीने की विद्या, विवेक, कला और क्षमता हासिल कर लें ।

उन्होंने कहा की, आज राजनीति मे भी ऐसी शिक्षा की आवस्यकता है जो देश में शांति, सदभावना, एकता, अखंडता और विकास को कायम रखने के लिए राजनेताओं को प्रेरित करे ।

उन्होंने आगे कहा कि मूल्य शिक्षा एक अलग विषय के रूप में न पढ़ाकर, स्कूल और कॉलेजों के सारे पाठ्यक्रम में समावेश किया जाए और इस दिशा में ब्रहमा कुमारिज जैसी आध्यात्मिक संगठनों का सेवा वे अवस्य लेंगे ।

सम्मानीय वक्ता के रूप में AICTE के अध्यक्ष प्रोफेसर अनिल सहस्रबुधे ने कहा की स्टूडेंट्स को सभी सब्जेक्ट को मजबूरी से नही बल्कि खुसी खुशी से और रुचि से पढ़ने की परिवारिक और अकैडमिक माहौल निर्माण करने की जरूरत है । वे तभी संभव होगा जब अध्यात्म और मूल्यों को सभी विद्यार्थियों के जीवन में जोड़ दिया जाए, कियूंकि खुशी अंदर से उभरती है, बाह्य वातावरण से नही ।

अपनी मुख्य वक्तव्य में ब्रहमा कुमारी संस्था की दिल्ली तथा रूस में स्थित अनेक राजयोग केंद्रों के निर्देशिका राजयोगिनी बी के चक्रधारी ने कहा कि आज मनुष्य में सेवा भाव समाप्त होकर संकीर्ण स्वार्थ भाव हावी हो गया है । इसका कारण पश्चात भोग वादी और भौतिक वादी अपसंस्कृति का प्रहार है जिसको हम भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान, सनातन मूल्यों, राजयोग ध्यान, सकारत्मक, स्वस्थ एवं सादा जीवन शैली से तिरोहित करसकते है और मूल्य शिक्षा द्वारा बच्चों का भविष्य उज्जवल बना सकते हैं ।

केंद्रीय मानव संसाधन मंत्रालय के ऊंच शिक्षा विभाग के ऑफीसर ऑन स्पेशल ड्यूटी डॉ शकीला शम शु ने कहा की आज की शिक्षा प्रणाली हमे सच्चा इंसान बनाने केलिए समर्थ और सम्पूर्ण

नही है। मानवीय मूल्यों को शिक्षा क्षेत्र और जीवन में जोड़ने की आवस्यकता है। मूल्यों को केवल चिंतन या बोलने तक न सीमित रख कर दैनिक जीवन आचरण और व्यवहार में नेता, शिक्षक, अभिभावक, बच्चों और नागरिकों सभीको उतारना चाहिए ।

माउंट आबू से ब्रहमा कुमारी संस्था की शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी बी के मृत्युंजय ने कहा कि शिक्षा की उद्देश्य केवल सूचना, रोजगार अथवा मनोरंजन नही है, इसके साथ साथ एम्पावरमेंट और एनलाइटनमेंट भी है जिससे मानव जीवन और समाज स्वस्थ, समृद्ध और प्रगतिशील हो।

उन्होंने कहा की आध्यत्मिक शिक्षा से आत्म विश्वास, आत्म बल, आत्म सम्मान और आत्म निर्भरशिलता बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सब में आती है और गरीबी, भ्रस्टाचार, अपराध और अन्य सभी समस्याओं से निपटने केलिए हर एक को बुद्धि, विवेक और सामर्थी प्राप्त होती है।

जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार ए पी सिद्दीक़ी ने कहा कि आज की माहौल में अड़ोस-पड़ोस, अभिभावक, शिक्षक आदि कहीं से भी बच्चों को मानवीय मूल्यों की प्राप्ति नही होरही है । इसका कारण यही के हम मूल्यों को जीवन में धारण नही किये है।आचरण से शिक्षा देना ज्यादा कारगर है।

कार्यक्रम के मुख्य संजोजिका राजयोगिनी बी के शुक्ला ने अपनी आशीर्वचन में कहा की सही शिक्षा जीवन के विपरीत परिस्थितियों में संतुलनता शिखाता है । सत्यता, प्रेम, दया, करुणा और सन्तुष्टता रूपी जीवन उपयोगी मूल्यों का समावेश कराता है । सुख और शांति अंतर आत्मा की निजी गुण और स्वभाव है, पिता परमात्मा उन गुणों के सागर है। इन शास्वत मूल्यों को जीवन में उभार ने केलिए आत्म चिंतन और प्रभु चिंतन रूपी राजयोग की विधि को अपनाना होगा ।

इस मौके पर **NCERT के सचिव मेजर हर्ष** ने कहा की आज हमे अपनी भारतीय संस्कृति और मुल्यों से जुड़ने की आवस्यकता है और इसे पूरे समाज में फेलाने हेतु नियमित रूप से एक मुहिम चलानी होगी।

लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय के डीन डॉ सविता मुदगल ने कुशल मंच संचालन किया तथा नन्हे मुन्हे बच्चों ने अध्यात्मिक नृत्य गीतों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया।

समेलन के अगले सत्र में हैपिनेस इंडेक्स के ऊपर बोलते हुए मुंबई यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डॉ स्वामी नाथन ने कहा कि मोरल मैथमेटिक्स के द्वारा भी बच्चों के जीवन को मूल्य निष्ठ बनाया जा सकता है । उन्होंने कहा कि जैसे पॉजिटिव पॉजिटिव मिलकर पॉजिटिव होती है, ऐसे जो काम हमे करना चाहिए और वे हम करते हैं तो रिजल्ट पॉजिटिव होती है ।

इसी तेरा नेगेटिव नेगेटिव मिलकर पॉजिटिव होते है अर्थात जो कर्म हमे नही करना चाहिए उसे अगर हम नही करते हैं तब भी रिजल्ट पॉजिटिव होती है । अगर जो नही करना चाहिए वह करते हैं, तो नेगेटिव प्लस पॉजिटिव का रिजल्ट नेगेटिव ही होता है। उन्होंने कहा ऐसी नैतिक गणित की शिक्षा बच्चों को देनी चाहिए